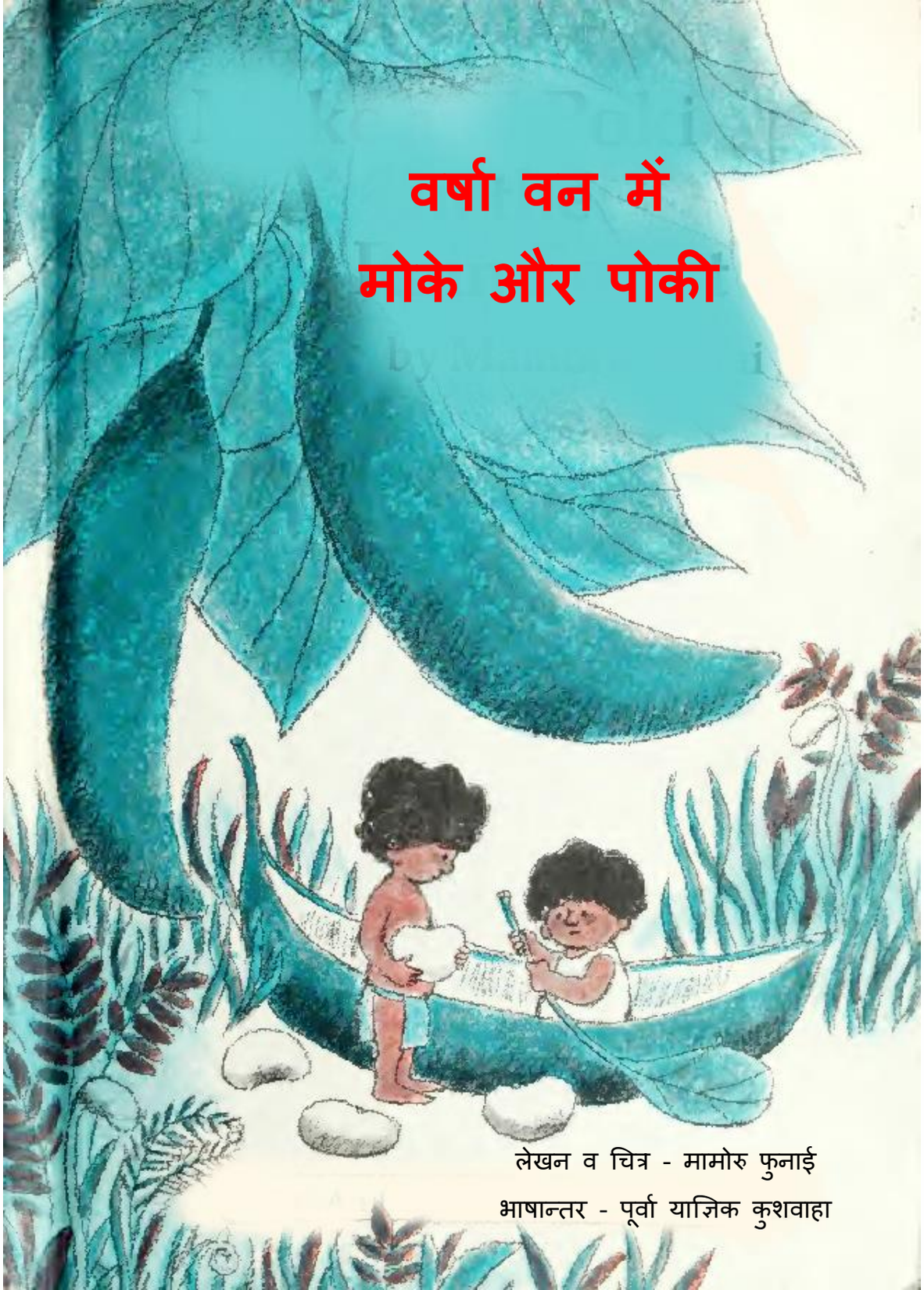

वर्षा वन में मोके और पोकी

लेखन व चित्र - मामोरु फुनाई
भाषान्तर - पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

वर्षा वन में
मोके और पोकी

लेखन व चित्र - मामोरु फुनाई
भाषान्तर - पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एलेन रुडिन के लिए

अनुक्रम

मोके और पोकी ने बनाया एक घर

मोके ने गाया चाँद के लिए एक गीत

फली के छिलके की नाव

इन्द्रधनुष

इस किताब के लोग और जीव-जन्तु हवाई राज्य में रहते हैं। इस किताब के कुछ शब्द हवाईयन भाषा के हैं। ये शब्द हैं :

मोके - एक नाम

पोकी - एक और नाम

मेनेहूनीज़ - छोटे कद के लोग

मेनेहूने - एक छोटे कद का व्यक्ति

टारो - हवाई में उगने वाला एक पौधा

अलोहा - अभिवाादन; प्यार; स्वागत; विदा

नेने-गूस - एक खास किस्म की बत्तख, जो हवाई का राज्य पक्षी है।

मोके और पोकी ने बनाया एक घर

मेनेहूनीज़ (यानी छोटे कद के लोग)
वर्षा वन में रहते थे।
मोके एक मेनेहूने था।
वह छह इंच लम्बा था।
वह एक झाड़ी में रहता था।

“एक असली घर इस वर्षा वन
में तुम्हें मिलेगा भला कहाँ?”
पोकी ने पूछा।
“चलो अपन घर ढूंढ़ते हैं,”
मोके ने सुझाया।

एक दिन
मोके ने अपने दोस्त पोकी से कहा,
“मैं एक झाड़ में रहते-रहते थक चुका हूँ।”
“तुम बड़े नासमझ हो,” पोकी ने कहा।
“पर मैं एक असली घर में
रहना चाहता हूँ,” मोके ने कहा।

मोके और पोकी ने सब ओर घर तलाशा
पर उन्हें कोई घर नहीं मिला।
“हमें एक भी घर दिखा तो नहीं,”
पोकी ने कहा।
“तो फिर मैं एक घर बनाऊंगा,”
मोके बोल पड़ा।

“मैं तुम्हारी मदद करूंगा,
पर सिर्फ़ इसलिए क्योंकि
तुम मेरे दोस्त हो,” पोकी ने कहा।
सो, मोके और पोकी ने घर बनाना शुरू कर दिया।

इतने में झींगा मछली आई।

“मैं घर बनाने में मुम्हारी मदद करूंगी,”

झींगा मछली ने कहा।

कुछ ही देर बाद एक नेने-बत्तख पास से उड़ती आई।

“मैं घर बनाने मैं तुम्हारी मदद करूंगी,”

नेने-बत्तख बोली।

तब कुत्ते ने उन्हें घर बनाते देखा।

“मैं भी मदद कर सकता हूँ,” कुत्ते ने कहा।

इसके बाद झिंगुर आया, उसने भी मदद करना तय किया।

कुछ ही घंटों में

घर बन कर तैयार हो गया।

“तुम सबको मदद करने के लिए शुक्रिया,”
मोके ने कहा। “अब यह मेरा
एक असली घर है और यह पूरा मेरा है।”
“नहीं, यह पूरा तुम्हारा नहीं है,”
झींगा मछली बोल पड़ी।
“मैंने मदद की थी,
सो यह घर मेरा भी है।”
“और मेरा भी,” नेने-बत्तख ने कहा।
“मैंने भी तो मदद की थी,” कुत्ते ने कहा।
“मैंने भी,” झिंगुर ने कहा।
“तो ठीक है,” मोके बोला,
“हम सब इस घर में रहेंगे।”
“सब नहीं,” पोकी ने कहा। “मैं तो झाड़ पर
अपने घर में रहना चाहता हूँ।”

“मैं गीली हो रही हूँ,” नेने-बत्तख ने शिकायत की।
उसने कुत्ते के साथ अपनी जगह बदली।
“अब मैं भीग रहा हूँ,” कुत्ता बोला।
कुत्ते ने झिंगुर के साथ जगह बदली।
“मेरे पंख गीले हो रहे हैं,”
झिंगुर ने कहा।
“मुझे भीगने से कोई एतराज़ नहीं,”
झींगा मछली ने कहा,
और उसने झिंगुर के साथ जगह बदल ली।

उस रात
मोके, झींगा मछली, नेने-बत्तख,
कुत्ता और झिंगुर,
नए घर में रहने गए।
अचानक बारिश होने लगी।
नेने-बत्तख को अपने सिर पर
बारिश की एक बूंद महसूस हुई।

बारिश ने ज़ोर पकड़ा।
अब तो हर ओर से पानी घर
के अन्दर आने लगा।
कुछ ही देर में छत बैठ गई,
ओर दीवारें ढ़ह गईं।

सब झाड़ी की ओर दौड़े।
उसी पर तो पोकी का घर था।
"ऊपर चढ़ने में हमारी मदद करो,"
मोके ने कहा।

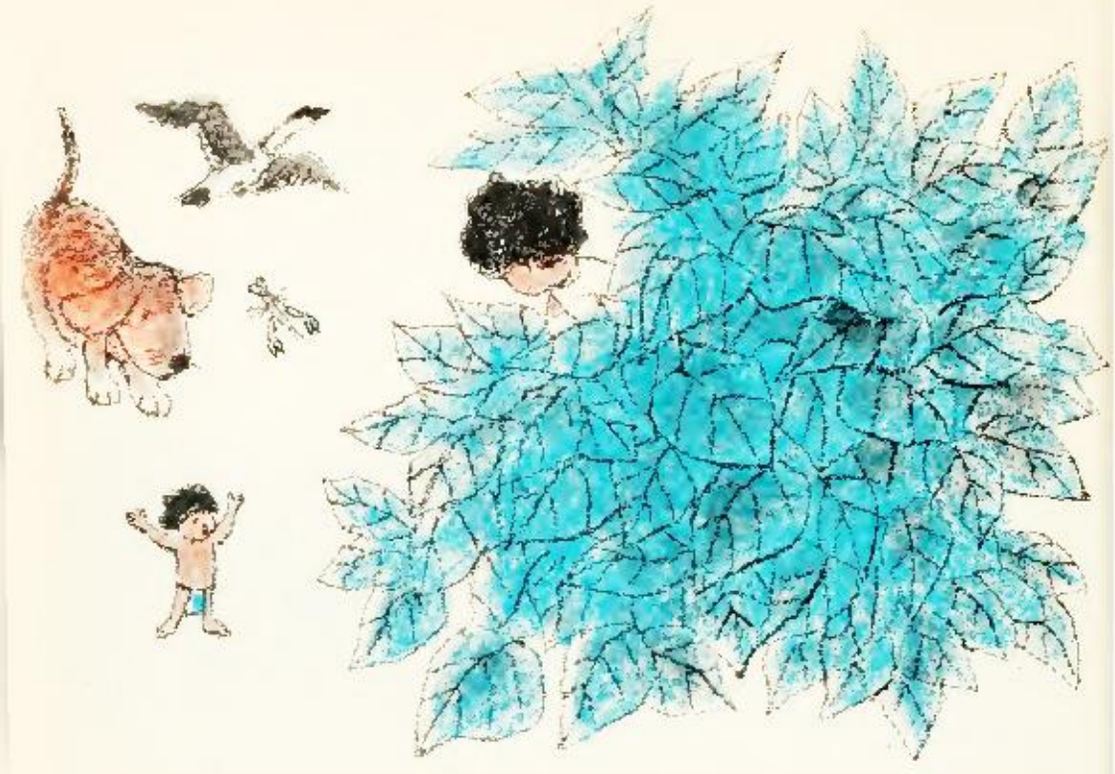

“क्या ऊपर जगह है?”
कुत्ते ने पूछा।
“खूब जगह है,”
पोकी ने कहा।
सो सब जन झाड़ी पर चढ़ गए।

उन्होंने झाड़ी की डालों पर जगह तलाश ली।
झाड़ी के पत्तों से
अपने सिर ढ़के
और सब साथ-साथ सो गए।

मोके ने गाया चाँद के लिए एक गीत

मोके ने चाँद के लिए गाया।

वह जितनी ज़ोर से गा सकता था, उसने गाया।

“तुम क्या कर रहे हो?”

नेने-बत्तख ने पूछा।

“अरे, पता नहीं चला?” मोके ने जानना चाहा।

“मैं चाँद के लिए गा रहा हूँ।

“क्या मैं भी साथ गा सकती हूँ?”

“बेशक गा सकती हो, नेने-बत्तख।”

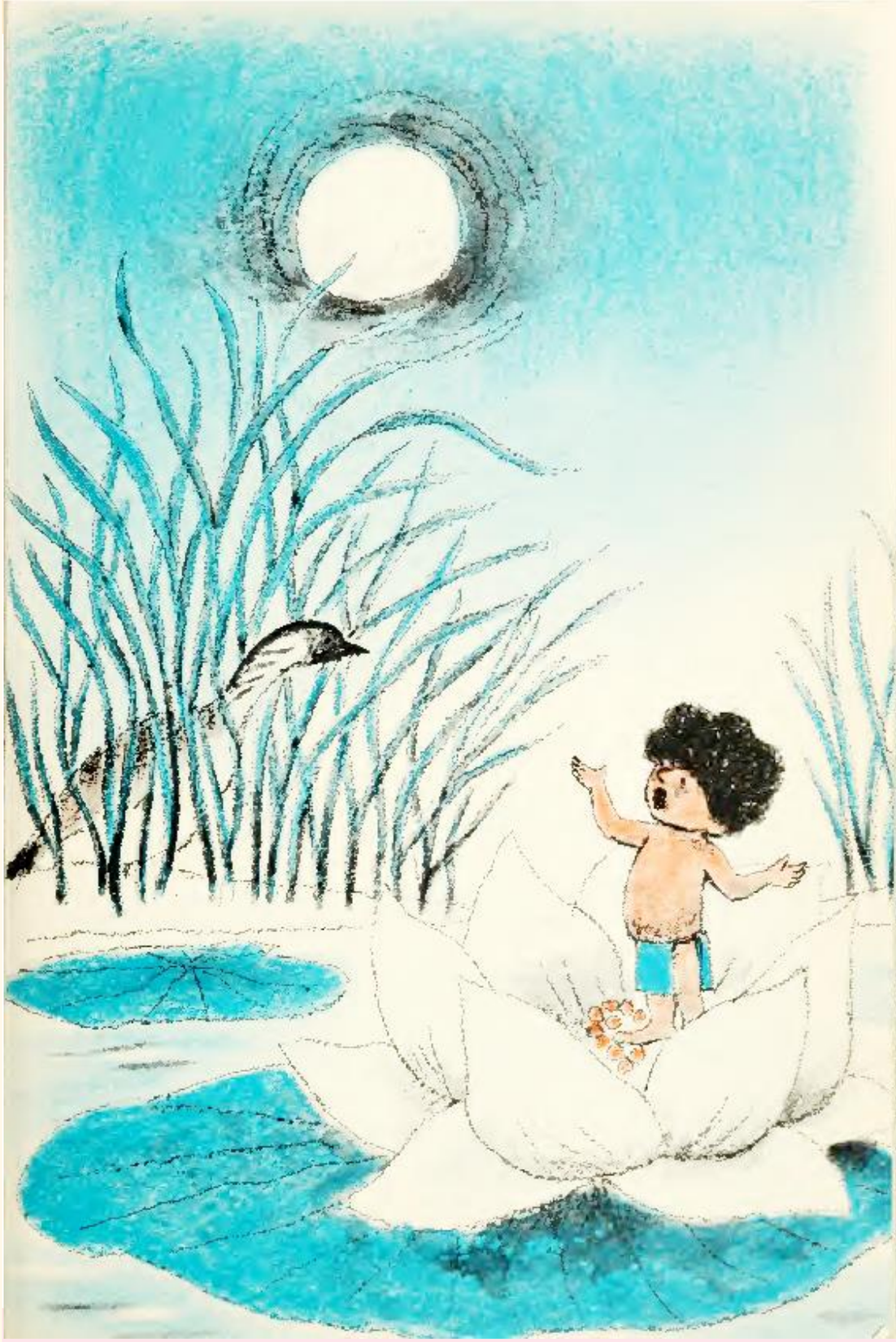

सो मोके और नेने-बत्तख
चाँद के लिए गाने लगे।
"एक मिनट रुको," मोके बोला,
कुछ तो गड़बड़ है।
कोई बेसुरा गा रहा है।"
ठीक उसी समय झिंगुर आया।
"क्या कर रहे हो तुम दोनों?" उसने पूछा।

"क्या पता नहीं चला?"
नेने-बत्तख ने कहा।
"हम चाँद के लिए गा रहे हैं।"
"क्या मैं भी गा सकता हूँ?"
"बेशक," मोके बोला।
सो अब मोके, नेने-बत्तख
और झिंगुर चाँद के लिए गाने लगे।
"एक मिनट रुको। कुछ गड़बड़ है,"
कोई बेसुरा गा रहा है,"
मोके ने कहा।

“अरे देखो तो! वे गा रहे हैं,
चाँद के लिए,” कुत्ते ने कहा।
“तुम लोग चाँद के लिए क्यों गा रहे हो?”
हरे मेंढ़क ने जानना चाहा।
“क्योंकि चाँद अकेला है, जो सुनता है,”
मोके ने जवाब दिया।
“बेशक,” हरे मेंढ़क ने कहा।
“पूछना मेरी ही नासमझी थी।”
“हम भी गाना चाहते हैं,”
कुत्ते और हरे मेंढ़क ने कहा।
“ठीक है,” मोके ने कहा।
सो सब मिल कर चाँद के लिए गाने लगे।

"एक मिनट रुको," मोके बोल पड़ा।
"कुछ तो गड़बड़ है।
कोई बेसुरा गा रहा है।"
"तो हम एक-एक कर बारी-बारी गाते हैं,"
कुत्ते ने सुझाया। "इससे पता चल जाएगा कि
बेसुरा कौन गा रहा है।"

नेने-बत्तख ने गाया।

“ना, वह नेने-बत्तख नहीं है,”

मोके बोला।

झिंगुर ने गाया।

“ना, वह झिंगुर नहीं है,” मोके ने कहा।

कुत्ते और हरे मेंढ़क ने गाया।

“ना, यह कुत्ता और हरा मेंढ़क भी नहीं है,”

मोके बोला।

तब मोके ने गाया।

“यह तो मोके है।

मोके बेसुरा गा रहा है,”

कुत्ते ने कहा।

मोके को बुरा लग गया।
"मैं तुम सबके साथ नहीं गाऊंगा।
मैं एक और गीत बरबाद नहीं करना चाहता,"
उसने कहा।
वह बहुत उदास हो गया।

"मुझे एक बात सूझी है!" कुत्ते ने कहा।
"तुम संगीत निर्देशक बन सकते हो।"
"हरेक गायक मण्डली को एक निर्देशक की ज़रूरत होती है,"
नेने-बत्तख बोली।
"यह ख़याल तो बहुत ही बढ़िया है,"
झिंगुर ने कहा।

सो मोके निर्देशक बना
और उसने एक गीत गाने में गायकों
का निर्देशन किया।

बाद में जब सब चले गए,
मोके बैठा और चाँद को निहारने लगा।
चाँद उस पर पूरे दम से चमक रहा था।
तब उसने जितनी ज़ोर से हो सकता था, एक गीत गाया।

फली के छिलके की नाव

मोके और पोकी सब्ज़ियों के बागान
के बीच चल रहे थे।
“अरे इन पौधों को तो देखो,”
मोके ने कहा। “ये कितने बड़े हैं!”
“हाँ, इन खीरों को देखो,” पोकी बोला।
“और ये टमाटर तो किसी घर जितने बड़े हैं,” मोकी ने कहा।

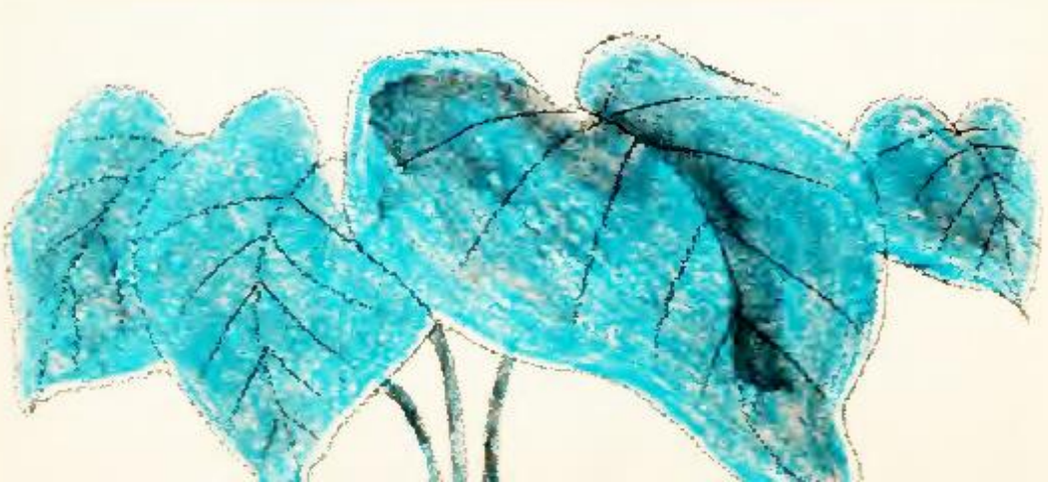

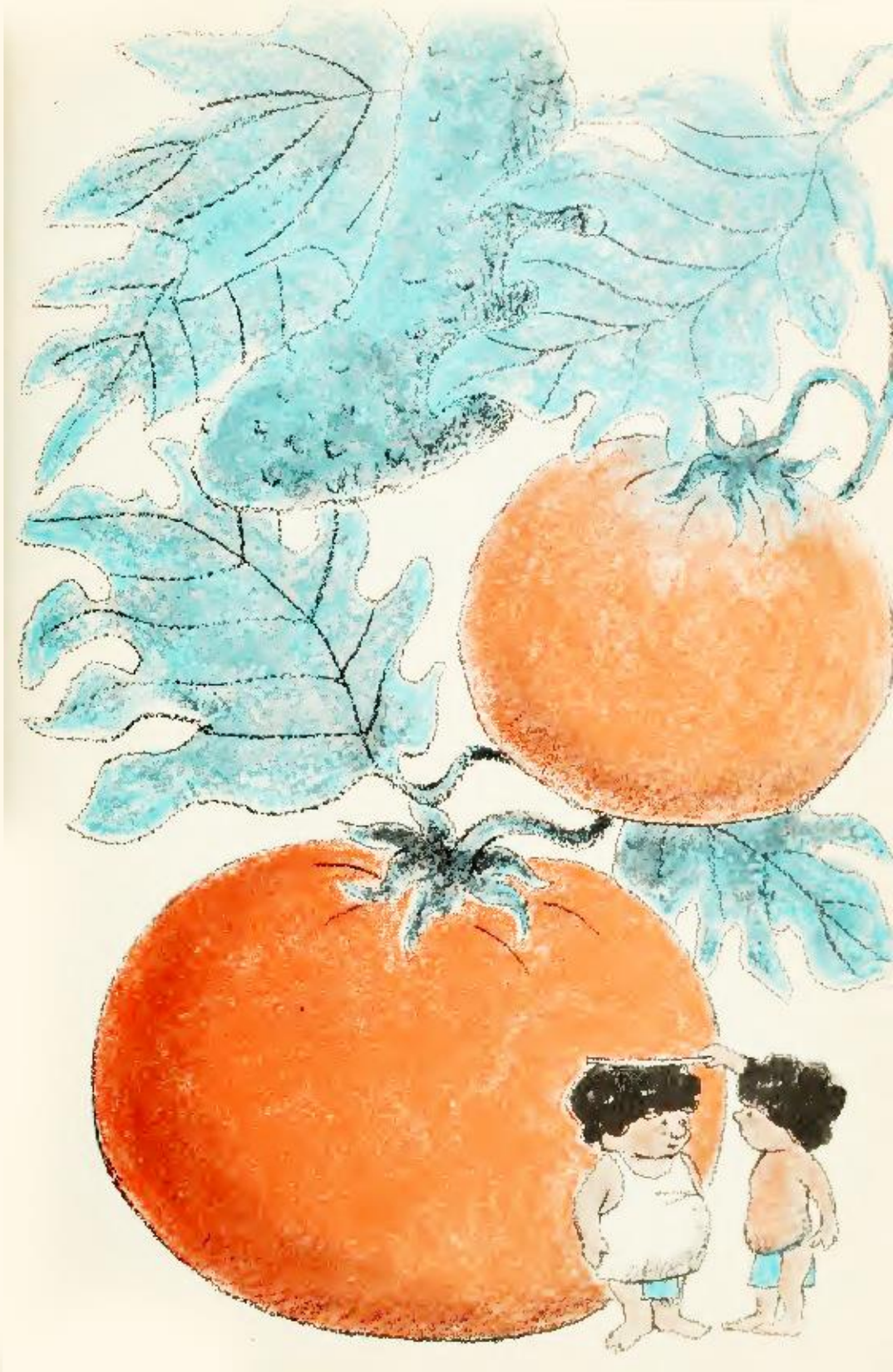

“देखो तो इन सेम की फलियों को,
ये तो नाव जितनी बड़ी हैं,”
पोकी हुलस कर बोला।
“नाव?” मोके ने पूछा।
“तुम्हें पता है ना। वही नाव जो पानी में तैर सकती है,”
पोकी ने कहा।
“नाव क्या होती है मैं जानता हूँ,” मोके बोला।

“मुझे एक बात सूझी है,
हम एक फली लेते हैं
और उससे एक नाव बना लेते हैं।”
“वाह! क्या बढ़िया ख़याल है,” पोकी ने कहा।
“और हम उसमें बैठ कर
दरिया में सैर करने जा सकते हैं।”
“अरे हाँ! पर हमें जल्दी करनी होगी,”
मोके बोला,” अंधेरा जो हो चला है।”
मोके और पोकी सेम की लता पर चढ़े,
और जो सबसे बड़ी फली थी उसे काट ली।
तब उन्होंने उसे छीला और उसके सारे दाने
निकाल कर उसे साफ़ कर लिया।

मोके और पोकी ने
फली के छिलके की नाव को
अपने सिर पर उठाया।
“दरिया तो यहीं पर है,” मोके ने कहा।
“हम बड़े किस्मत वाले हैं,” पोकी ने खुश हो कहा।
“यह तो सचमें तैर रही है।”
मोके ओर पोकी ने एक झाड़ से दो सपाट पत्ते ढूंढ़ लिए।
“ये हमारी पतवार बन सकते हैं,” मोके बोला।

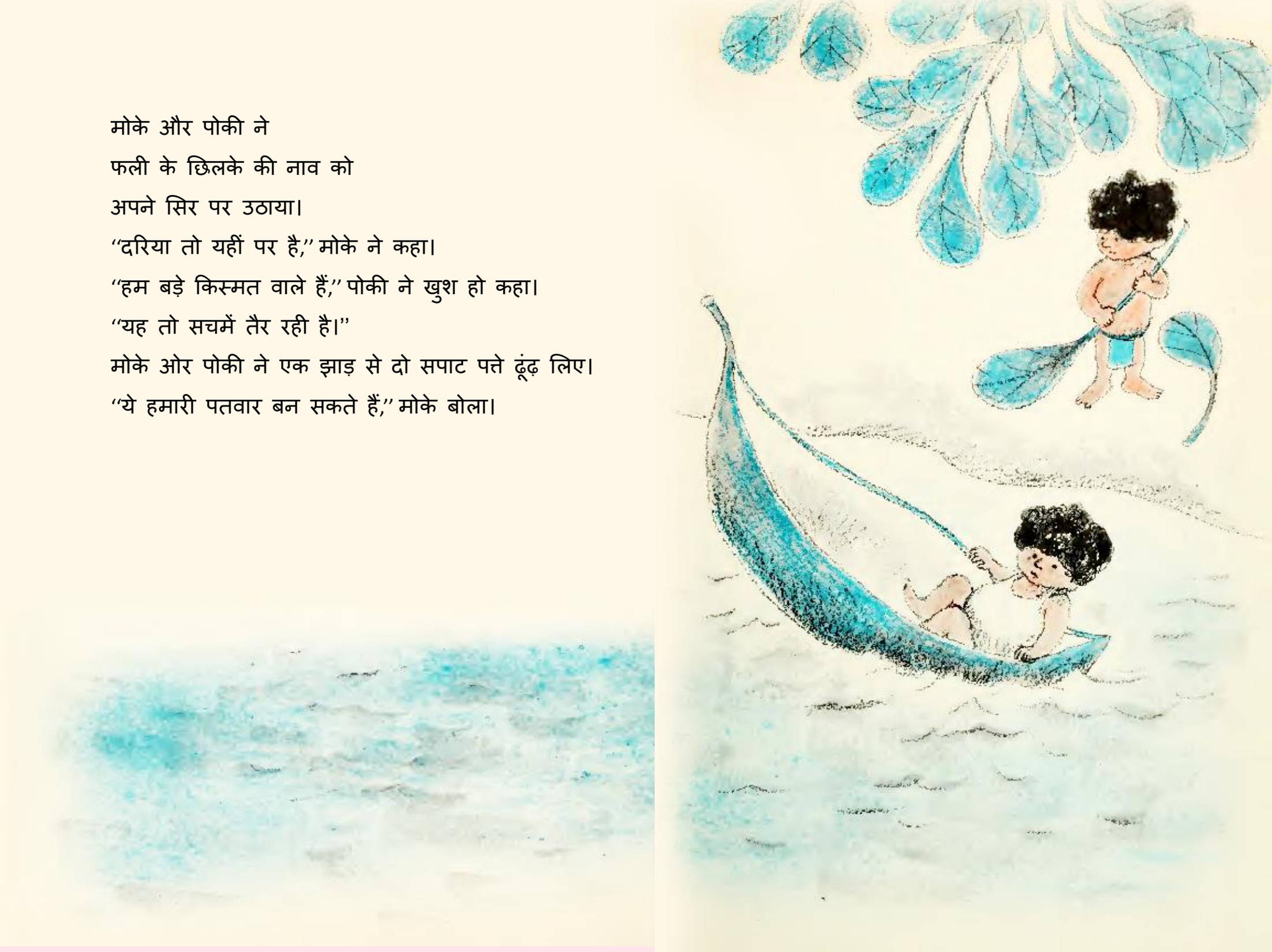

मोके ओर पोकी
फली के छिलके की नाव में बैठे।
अपनी पतवारों से वे नाव को
पानी में दूर तक खेते गए।

उन्होंने यह गीत गायाः

चला रहे हम अपनी नाव,
दरिया में बढ़ चले हैं हम।
दुनिया में ऐसा कोई ठौर नहीं,
जहाँ चाहते होना हम।
बस चलना है नाव में,
बढ़ना हमें है दरिया में।

इधर काले बादलों ने तारों को ढ़कना शुरू कर दिया।
तूफान गरजा और बिजली कड़की।
फली के छिलके से बनी नाव,
पानी में ऊपर-नीचे उछलने लगी।

"जल्दी करो! नाव से पानी उलीचो,"
मोके चीखा।
मोके और पोकी जितनी तेज़ी से हो सकता था,
नाव से पानी उलीचने लगे।

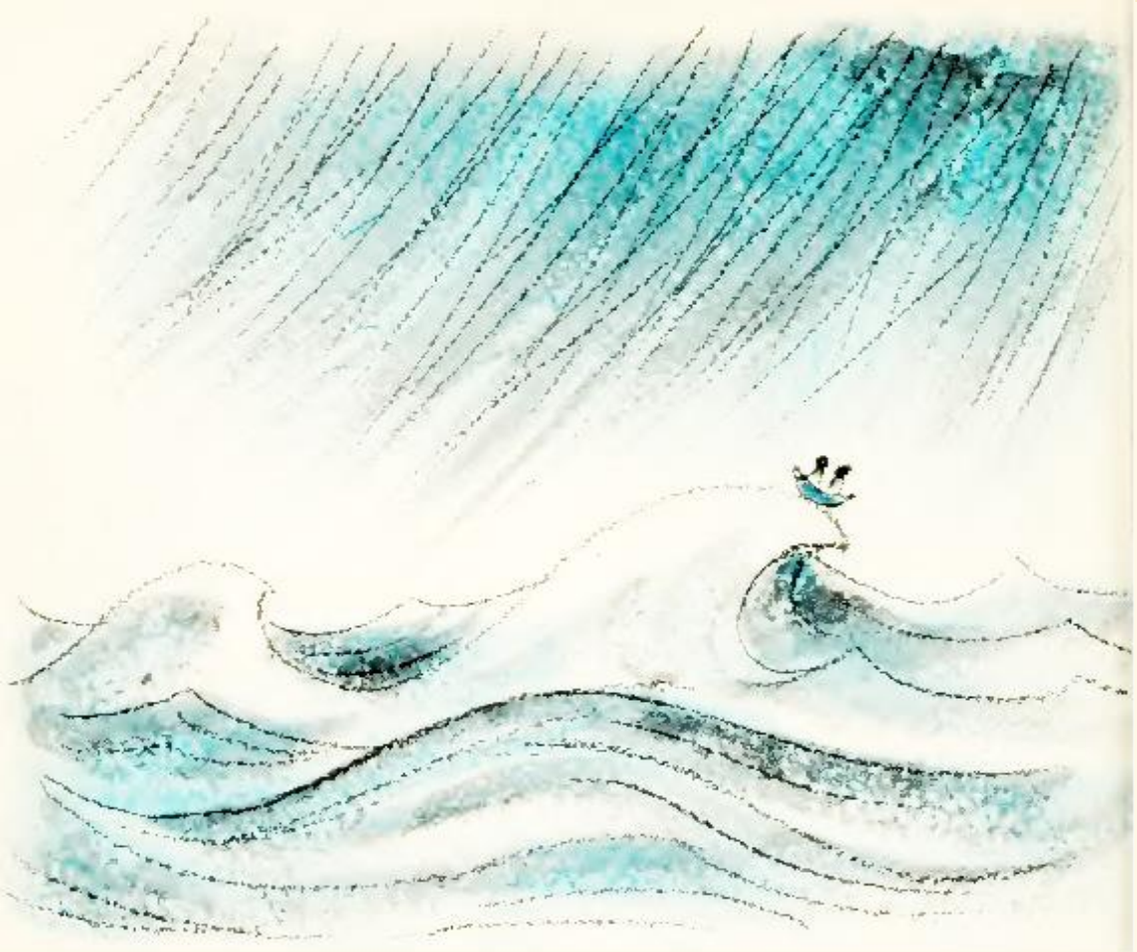

फली की नाव पानी में डोल रही थी।
“मुझे लगता है मुझे उल्टी होने वाली है,”
पोकी ने कहा।
“अरे इस वक्त उल्टी न करना,” मोके बोला।
“फिलहाल बस पानी उलीचो।”

“क्या तुम तैर सकते हो?” पोकी ने पूछा।
“नहीं भाई, अब तक तो नहीं,” मोके ने कहा।
“जल्दी! जल्दी! उलीचते जाओ!”
मोके चिल्लाया।

पर नाव में और पानी भरने लगा।
फली के छिलके की नाव पानी में
डूबने लगी।
“कोई फ़यदा नहीं,” मोके बोला।
“बस अन्त समय आ गया है,” पोकी ने कहा।
“यह अलविदा का मौका है,” मोके ने कहा
“अलोहा,” पोकी बोला।
“अलोहा, मेरे दोस्त,” मोके ने जवाब में कहा।

फली के छिलके की नाव
नीचे और नीचे डूबती गई।
तब अचानक उसने डूबना बन्द कर दिया।
“यह क्या हुआ?” पोकी ने पूछा।
“हम तल तक पहुँच गए हैं,” मोके ने कहा।

"यह दरिया तो बहुत गहरा नहीं है,"
पोकी ने कहा।
"हाँ, पर मैं खुश हूँ कि यह गहरा नहीं है"
मोके बोल पड़ा। "चलो पोकी,
अपन घर चलते हैं।"

मोके और पोकी
फली के छिलके की नाव से उतरे
और किनारे चल दिए।
बारिश बन्द हो चुकी थी।
तारे फिर से आसमान में
टिमटिमाने लगे थे।

इन्द्रधनुष

मोके एक चट्टान पर बैठा।
वह वहाँ बैठ वर्षा वादी को घूर रहा था।
वह बड़ी देर तक वहीं बैठा रहा।
तब उसने यह गीत गायाः

इन्द्रधनुष, इन्द्रधनुष आसमान के,
सुन्दर तेरे रंग दिखें मेरी आँखों को।
लाल और नीला,
पीला, हरा, बैंगनी।

इतने में जंगल से आए
नेने-बत्तख, चूहा,
कुत्ता और हरा मेंढ़क।
"तुम क्या कर रहे हो?" चूहे ने मोके से पूछा।
"मैं इन्द्रधनुष का इन्तज़ार कर रहा हूँ,"
मोके ने जवाब दिया।
"अरे, इससे बड़ी नासमझी की बात मैंने कभी सुनी ही नहीं,"
नेने-बत्तख बोली,
"इससे बेहतर करने को कुछ तो होगा।"

"तुम क्या कर रहे हो?" पोकी ने पूछा।
"मैं इन्द्रधनुष का इन्तज़ार कर रहा हूँ,"
मोके ने बताया।
"इन्द्रधनुष!" पोकी ने कहा।
"यह कैसी बेवकूफ़ी का काम कर रहे हो तुम।"

कुत्ता और हरा मेंढ़क मोके पर हंसने लगे,
“इन्द्रधनुष! हाहाहाहा!
बात तो मज़ाकिया है।”

“चलो चलें,” पोकी ने कहा, “अपन चल कर खेलते हैं।”
पोकी, नेने-बत्तख, चूहा,
कुत्ता और हरा मेंढ़क,
सब वर्षा वन में खेलने चल पड़े।

जल्द ही बारिश होने लगी,
सो सभी एक पेड़ के नीचे भागे।
“अब हम क्या करें?”
नेने-बत्तख ने पूछा।
“अरे कई चीज़ें होगीं
जे हम कर सकते हैं,” पोकी ने कहा।
“करने को कुछ सोच सकते हो?”
चूहे ने जानना चाहा।
“मुझे तो कुछ सूझ नहीं रहा,” कुत्ते ने कहा।
“मुझे भी कुछ नहीं सूझ रहा,” हरा मेंढ़क बोला।
वे बारिश को धरती पर गिरते देखने लगे।

उन्होंने बरसाती बूंदों को
पत्तों से टपकते देखा।

''सोच रहा हूँ कि मोके क्यों
इन्द्रधनुष देखना चाहता था,'' नेने-बत्तख ने कहा।
''शायद इसलिए कि उसने कभी इन्द्रधनुष
देखा ही न हो,'' पोकी ने कहा।
''क्या तुमने इन्द्रधनुष देखा है?'' चूहे ने पूछा।
''मुझे पक्का ध्यान नहीं,'' नेने-बत्तख ने जवाब दिया।

''सच कहूँ,'' पोकी बोला,
''मैंने भी कभी इन्द्रधनुष नहीं देखा है।''
''मैंने भी नहीं देखा,'' हरे मेंढ़क ने कहा।
''तो हम इन्तज़ार किस बात का कर रहे हैं,''
पोकी ने सबसे सवाल किया।

मोके अब भी चट्टान पर बैठा था।
एक चौड़े पत्ते से अपना सिर ढ़के।
"क्या इन्द्रधनुष आया?" पोकी ने पूछा।
"अभी तक तो नहीं," मोके ने कहा।
"क्या हम भी तुम्हारे साथ बैठ सकते हैं?"
पोकी ने सवाल किया।
"बेशक बैठो," मोकी ने कहा।

पोकी, नेने-बत्तख, चूहा
कुत्ता और हरा मेंढ़क
मोके के चौड़े पत्ते के नीचे बैठे।
सब वर्षा वादी को घूरने लगे।
जल्द ही सूरज
बादलों के बीच से झांकने लगा।
तब एक सतरंगी इन्द्रधनुष नज़र आया।
तब एक और, फिर एक और।
पूरी वर्षा वादी इन्द्रधनुषों से भर गई।

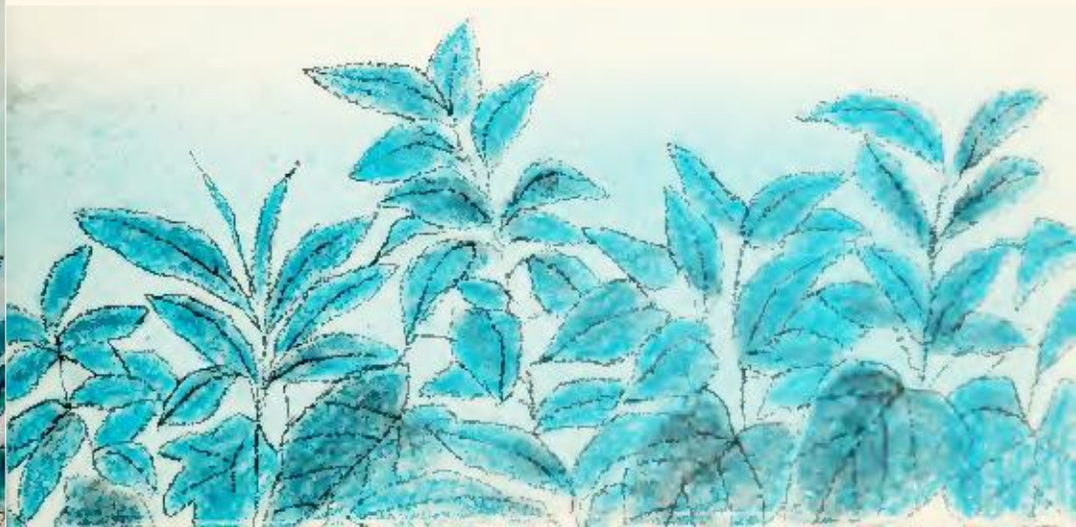

मोके ओर उसके दोस्त खुश हो गए।
उन्होंने तालियाँ बजाईं।
तब यह गीत गायाः

इन्द्रधनुष, इन्द्रधनुष आसमान के,
सुन्दर तेरे रंग देखें मेरी आँखें।
पड़ती जब बारिश, सकते नहीं खेल,
देखें तब हम इन्द्रधनुष बैठ सारा दिन।